[This question paper contains 6 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 2502

Unique Paper Code : 12051302

Name of the Paper : हिन्दी कविता (आधुनिक काल- छायावाद तक)

Name of the Course : **B.A. (H) हिन्दी CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) प्रियतम् तुम श्रुति-पथ से आये। (8)

तुम्हें हृदय में रख कर मैंने अधर-कपाट् लगाये।

मेरे हास-विलास! किन्तु क्या भाग्य तुम्हें रख पाये ?

दृष्टि मार्ग से निकल गये ये तुम रसमय मनभाये!

प्रियतम तुम श्रुति-पथ से आये।

अथवा

स्नेह-निर्झर बह गया है।
रेत ज्यों तन रह गया है।
आम की यह डाल जो सूखी दिखी,
कह रही है- "अब यहाँ पिक या शिखी
नहीं आते, पंक्ति मैं वह हूँ लिखी
नहीं जिसका अर्थ
जीवन दह गया है।"

(ख) 'हित-वचन नहीं तूने माना, मैत्री का मूल्य न पहचाना, (7)
तो ले, मैं भी अब जाता हूँ, अन्तिम संकल्प सुनाता हूँ।
याचना नहीं, अब रण होगा,
जीवन-जय या कि मरण होगा।

अथवा

यहीं कहीं पर बिखर गयी वह
भग्न विजय-माला-सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं
यह स्मृति-शाला सी।।
सहे वार पर वार अन्त तक
लड़ी वीर बाला-सी
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर
चमक उठी ज्वाला-सी।।

2. 'यशोधरा' को केन्द्र में रखते हुए मैथिलीशरण गुप्त की नारी-विषयक दृष्टि पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

'यशोधरा' की भाषागत् विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

3. 'लहर' में व्यक्त जयशंकर प्रसाद के काव्य-सौन्दर्य का विवेचन कीजिए।
(12)

अथवा

'अरी वरुणा की शांत कछार' का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. पाठ्यक्रम में निर्धारित कविताओं के आधार पर निराला की काव्य-प्रवृत्तियों पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

'तोड़ती पत्थर' कविता की मूल-संवेदना पर प्रकाश डालिए।

5. 'रश्मिरथी' के आधार पर कृष्ण-कर्ण संवाद का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं का वैशिष्ट्य स्पष्ट कीजिए।

6. दिए गए निर्देशों के आधार पर किन्हीं **दो** काव्यांशों का रचना-कौशल लिखिए : (6+6)

(क) सुधा-धार यह नीरस दिल की
मस्ती मगन तपस्वी की।
जीवन-ज्योति नष्ट नयनों की
सच्ची लगन मनस्वी की।।
बीते हुए बालपन की यह
क्रीड़ा पूर्ण वाटिका है।।
वही मचलना वही किलकना
हँसती हुई नाटिका है।। (वात्सल्य-वर्णन)

(ख) काट अन्ध-उर के बन्धन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे।
नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव,
नवल कण्ठ, नव जलद-मन्द्र रव;
नव नभ के नव विहग-वृन्द को
नव पर, नव स्वर दे! (भाव-सौन्दर्य)

(ग) वसुधा पर ओस बने बिखरे
हिमकन आँसू जो क्षोभ भरे
उषा बटोरती अरुण गात!
अब जागो जीवन के प्रभात!

तम-नयनों की तारायें सब-
मुँद रही किरण दल में है अब,
चल रहा सुखद यह मलय वात!
अब जागो जीवन के प्रभात! (शिल्प-सौन्दर्य)